कुछ भी नहीं असंभव

नैल्ली ब्लाई

कुछ भी नहीं असंभव

कुछ भी नहीं असंभव

नैल्ली ब्लाई

सन 1885 में कुछ लोग मानते थे कि औरतों के लिए कोई काम या नौकरी करना असंभव था. लेकिन नैल्ली ब्लाई ने कहा, “कुछ भी असंभव नहीं है.”

नैल्ली उस समय 17 वर्ष की थी और उसने एक समाचार पत्र में एक लेख पढ़ा था जिसका शीर्षक था, “लड़कियाँ क्या कर सकती हैं.” उस लेख में लिखा था कि कोई भी औरत घर के बाहर कुछ भी सही ढंग से न कर सकती थी. नैल्ली को उस लेख का तर्क सही न लगा और उसने अपने मन की बात उस समाचार पत्र को लिख कर भेजी. उसने इतना अच्छा पत्र लिखा था कि समाचार पत्र ने उसे नौकरी पर रख लिया.

उस समय से नैल्ली अख़बार में एक रिपोर्टर के रूप में काम करने लगी. रिपोर्टर का काम होता है उन घटनाओं के बारे लिखना जो उसने देखी होती है और उन बातों के विषय में लिखना जो लोग उसे बताते हैं.

नैल्ली अपना काम अच्छे से करती थी. वह जगह-जगह घूमती थी. नए लोगों से मिलना, नई चीज़ें देखना उसे अच्छा लगता था. जो कुछ वह देखती थी और जो कुछ लोग उसे बताते थे उसके विषय में वह लिखती थी. लोग नैल्ली के लेख पढ़ना पसंद करते थे.
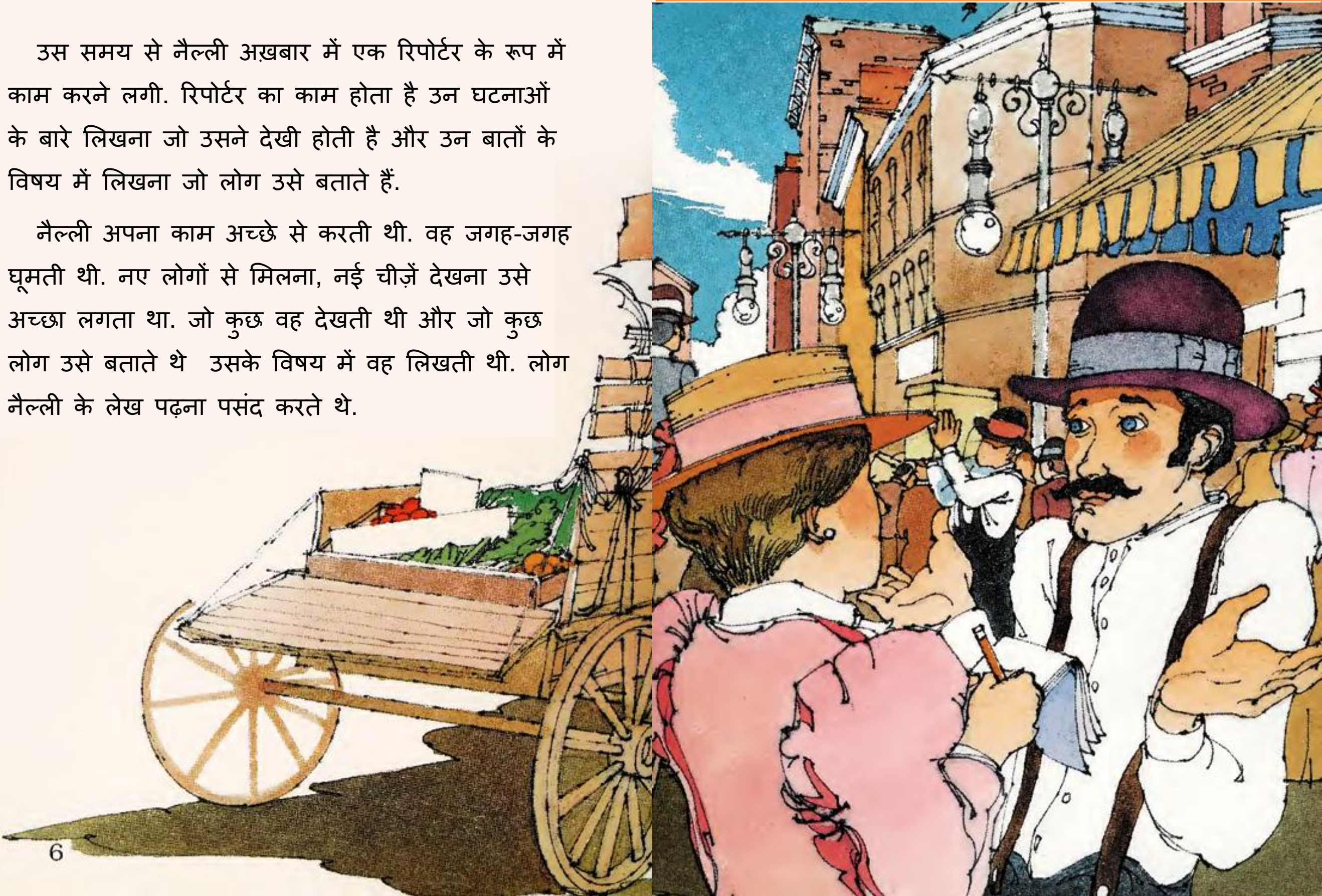
सन 1888 में वह न्यू यॉर्क सिटी के समाचार पत्र, *द वर्ल्ड* में रिपोर्टर का काम कर रही थी.

एक दिन नैल्ली ने जॉन काक्रिल, जो वह अख़बार चलाते थे, से बात की. उसने उन्हें उस पुस्तक, *अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज़*, के बार में बताया जो उसने पढ़ी थी. इस कहानी में एक व्यक्ति पूरी दुनिया का चक्कर अस्सी दिनों में लगाता है. उन दिनों किसी को विश्वास न था कि सच में कोई ऐसा कर सकता था. लेकिन नैल्ली प्रयास करना चाहती थी.
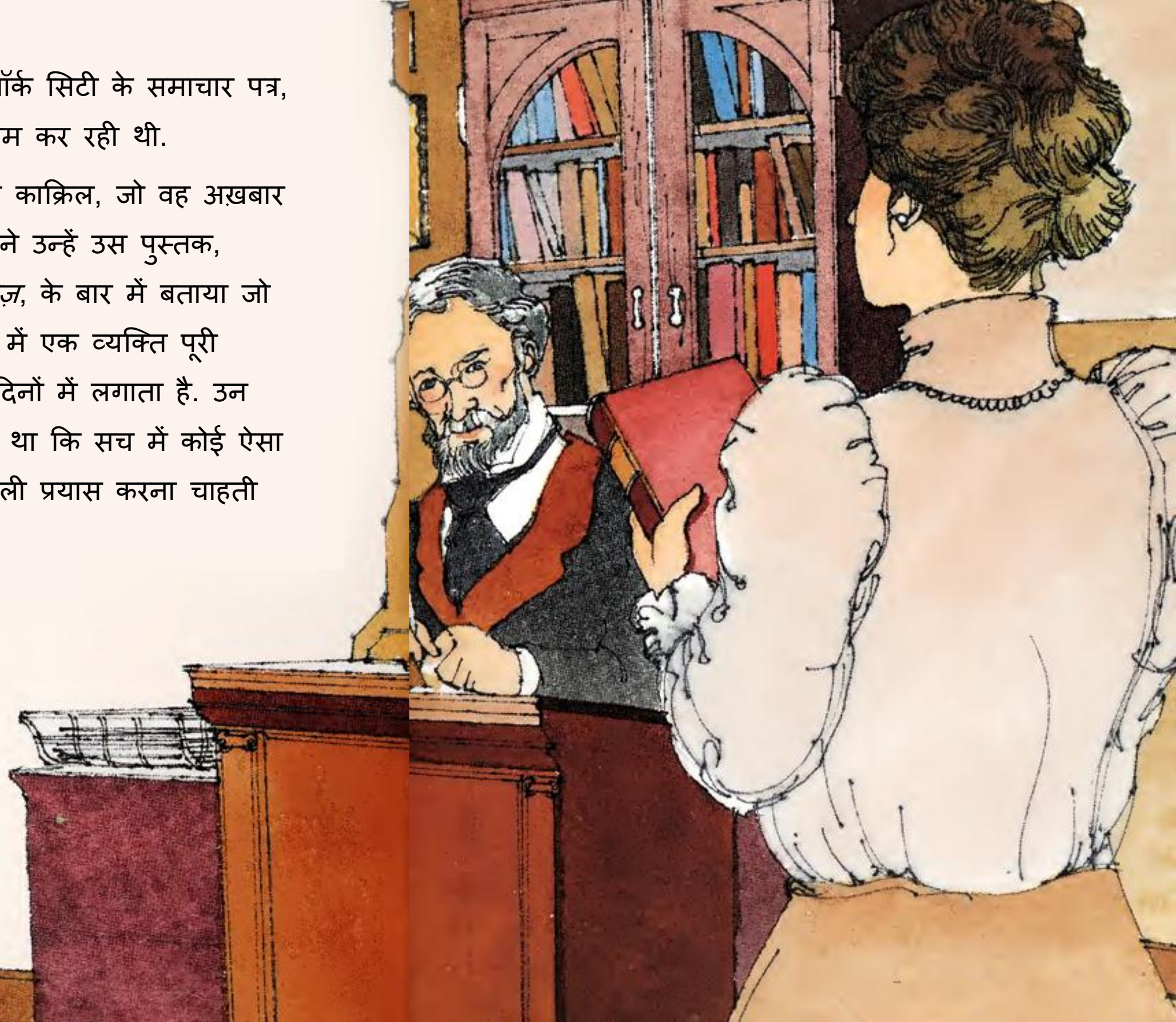
सन 1888 में एक जगह से दूसरी जगह जाने में बहुत समय लग जाता था. उस समय वायुयान नहीं हुआ करते थे. सागर पार करने के लिए लोगों को समुद्री जहाज़ में कई सप्ताह यात्रा करनी पड़ती थी.

धरती पर यात्रा करने के लिए लोग रेलगाड़ी में जाते थे. लेकिन उन दिनों में रेलगाड़ियाँ उतनी तेज़ न चलती थीं जितनी तेज़ अब चलती हैं. कहीं पहुँचने के लिए रेल द्वारा भी कई दिन लग जाते थे.

अस्सी दिन में सारी दुनिया का चक्कर लगाना तब असंभव लगता था.

शुरू में मिस्टर काक्रिल नहीं चाहते थे कि नैल्ली दुनिया का चक्कर लगाने की कोशिश करे. उन्हें लगता था कि वह ऐसा नहीं कर पाएगी. लेकिन आखिरकार वह मान गये.

नैल्ली ने अपने साथ ले जाने के लिए सिर्फ एक बैग तैयार किया. एक रेलगाड़ी से दूसरी रेलगाड़ी में जाने के लिए वह अपने सामान के लिए प्रतीक्षा नहीं करना चाहती थी.

14 नवम्बर 1889 के दिन, सुबह 9.40 के समय, नैल्ली न्यू जर्सी में एक जहाज़ पर सवार हो गई. आखिरकार दुनिया का चक्कर लगाने की यात्रा उसने आरंभ कर दी थी.
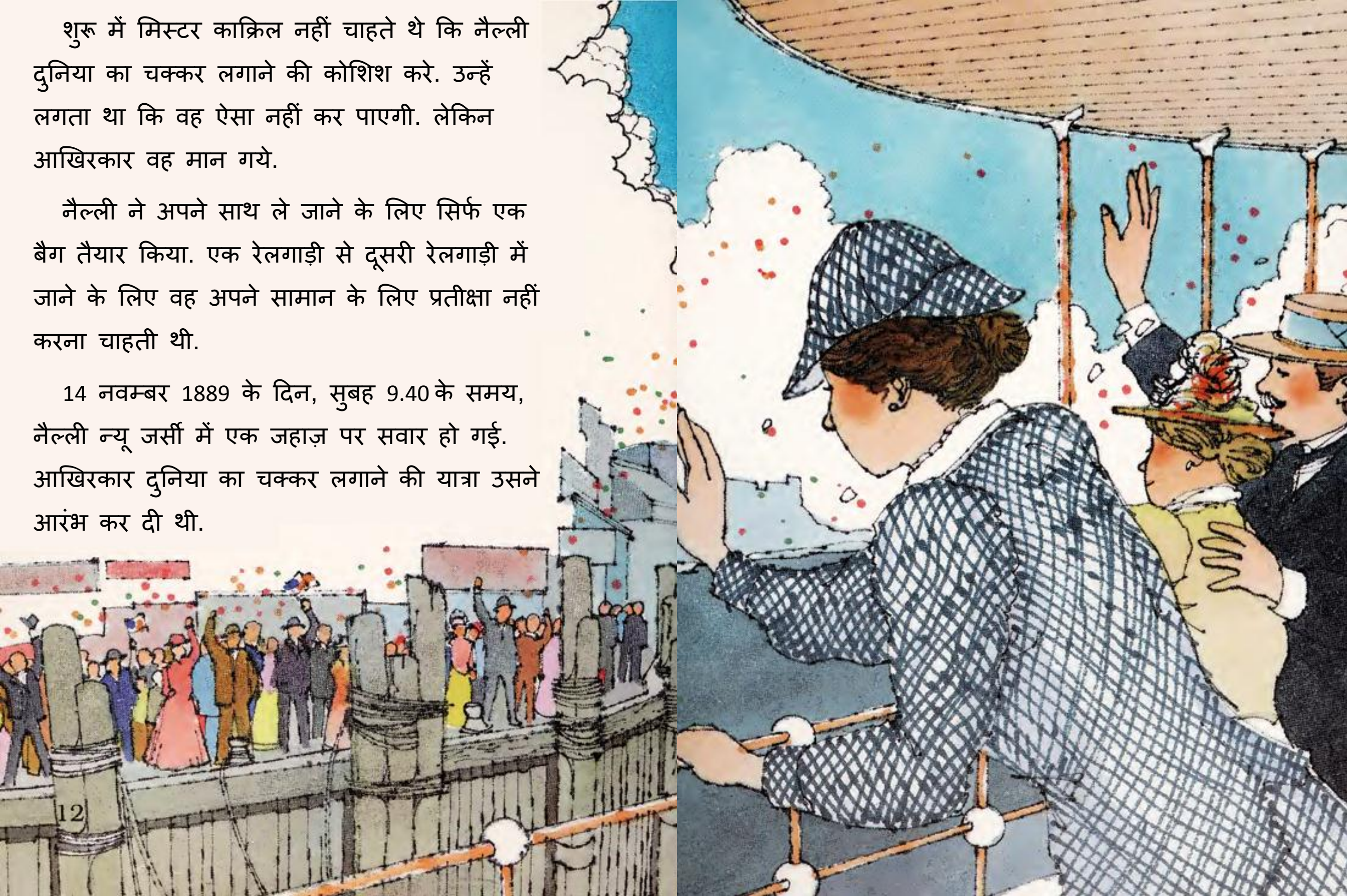
कई सप्ताह की समुद्री यात्रा करने के बाद नैल्ली इंग्लैंड पहुँची. वहाँ उसकी भेंट एक अन्य रिपोर्टर से हुई जो *द वर्ल्ड* के लिए इंग्लैंड में काम करता था.

रिपोर्टर ने नैल्ली से पूछा कि यूरोप में वह क्या देखना चाहती थी. उसने कहा कि वह एक व्यक्ति से मिलना चाहती थी. जिस व्यक्ति ने *अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज़* पुस्तक लिखी थी वह उससे मिलना चाहती थी. वह व्यक्ति था ज्यूल्स वर्न.
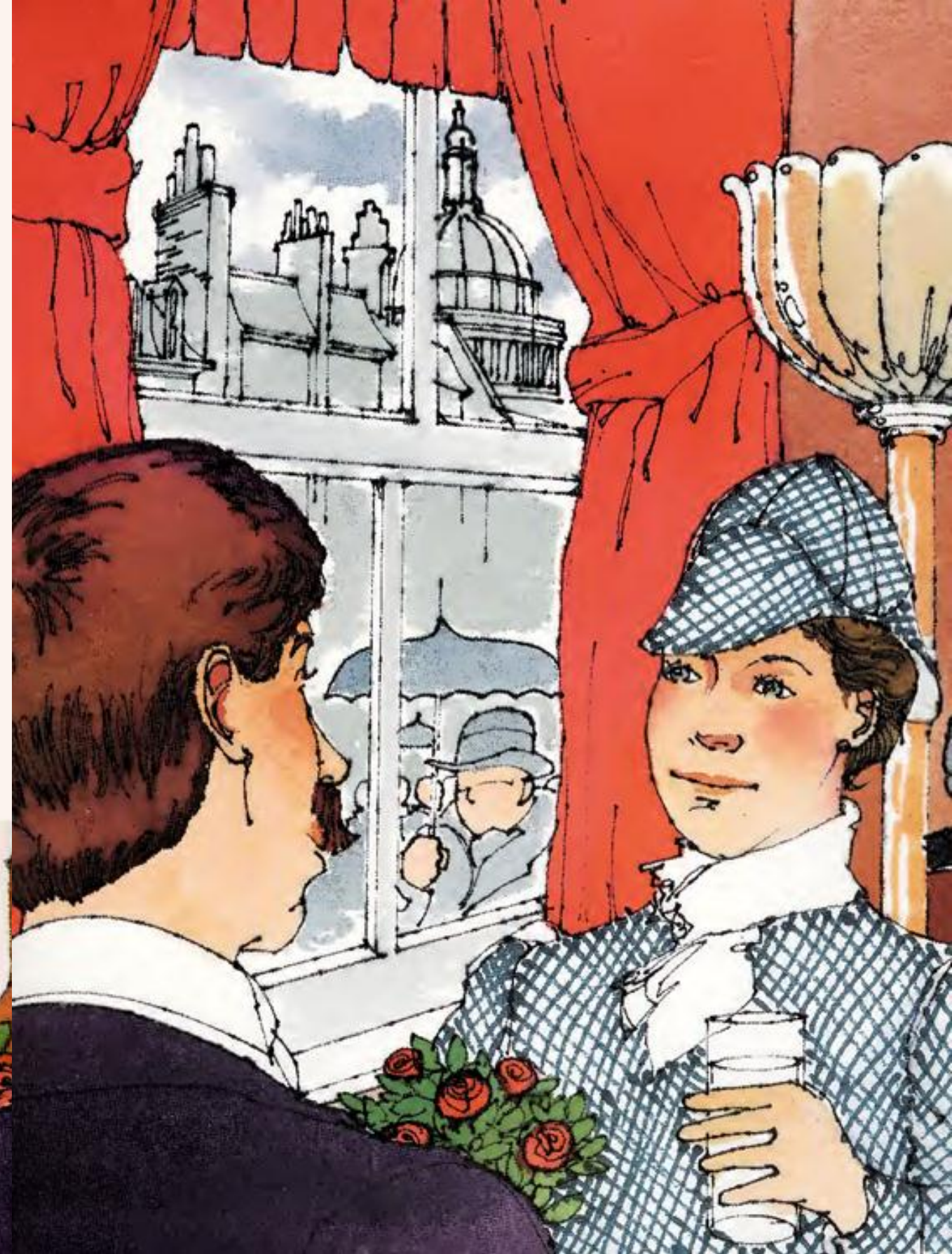
"ज्यूल्स वर्न से मिलना चाहती हो?" रिपोर्टर बोला. "यह असंभव है. तुम्हारे पास समय नहीं है!"

"कुछ भी असंभव नहीं है," नैल्ली ब्लाई ने कहा.

ज्यूल्स वर्न से मिलने के लिए नैल्ली को दो दिन रेल की यात्रा करनी पड़ी. यात्रा में उसे सोने के लिये समय न मिला. लेकिन आखिरकार वह फ्रांस में उस जगह पहुँच गई जहाँ ज्यूल्स वर्न का घर था.
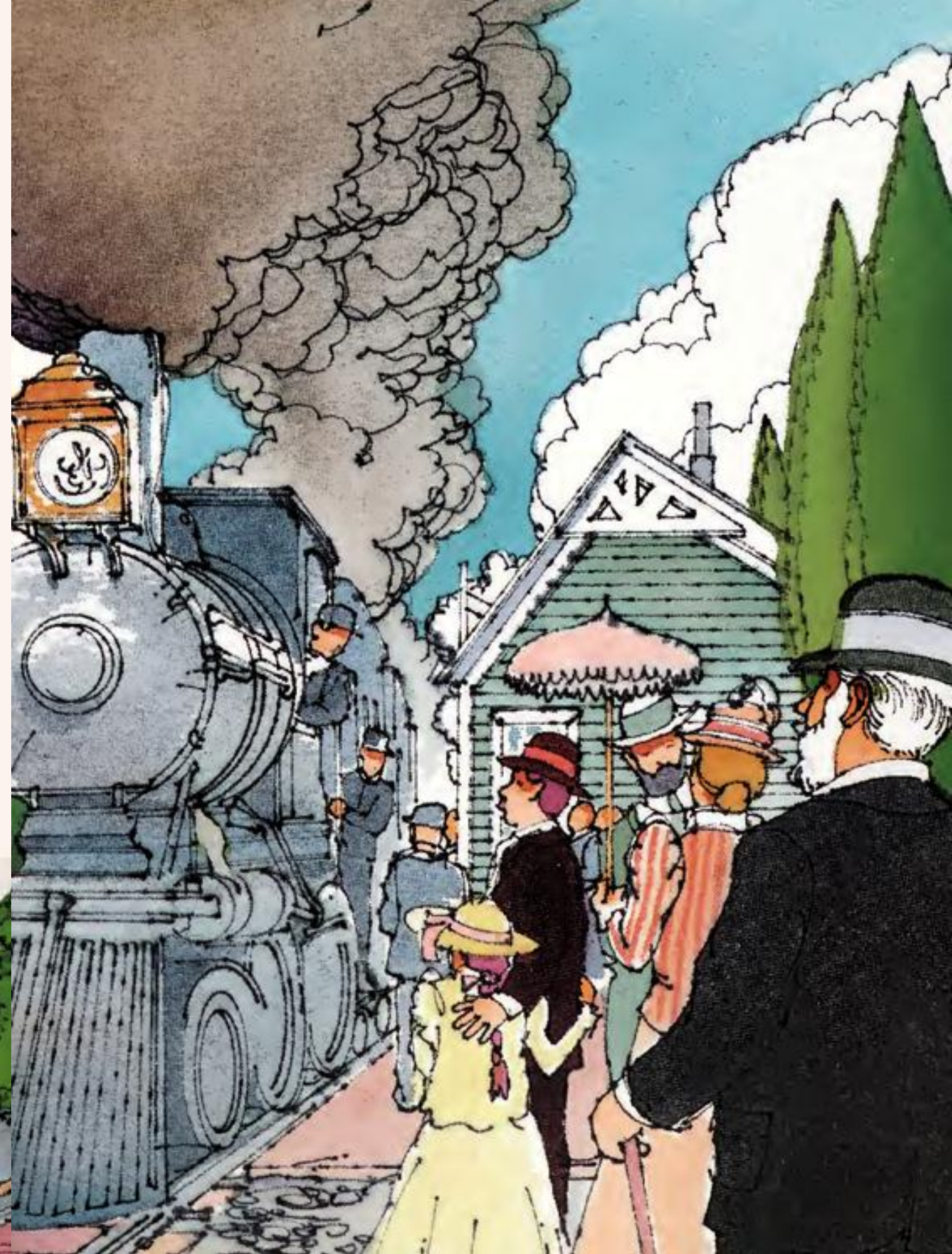
नैल्ली ज्यूल्स वर्न के घर आई. लेखक से कई बातें पूछने का उसे अवसर मिला. और वह जगह भी देखी जहाँ उसने *अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज़* लिखी थी.

लेकिन नैल्ली को तुरंत ही वापस जाना था.

“गुड लक, नैल्ली,” ज्यूल्स वर्न ने कहा. “मैं आशा करता हूँ कि तुम अस्सी से कम दिनों में दुनिया का चक्कर लगा पाओ.”

नैल्ली को भी यही आशा थी. लेकिन ज्यूल्स वर्न से मिलने के लिए उसने दो दिन गंवा दिए थे. क्या वह समय से पहले घर पहुँच पाएगी?

नैल्ली अच्छी गति से यात्रा कर हांग कांग पहुँची. लेकिन जब वह वहाँ पहुँची तो उसे एक व्यक्ति ने बताया कि एक अन्य रिपोर्टर, एलिज़ाबेथ बाइलैंड, भी दुनिया का चक्कर लगा रही थी.

मिस बाइलैंड का प्रयास था कि वह नैल्ली से कम समय में दुनिया का पूरा चक्कर लगा ले. उसने कुछ दिन पहले ही हांग कांग से प्रस्थान किया था. उस व्यक्ति ने कहा कि नैल्ली के लिए मिस बाइलैंड से पहले वापस पहुँचना असंभव था.

“कुछ भी असंभव नहीं है,” नैल्ली ने उत्तर दिया. लेकिन अब उसे पूरा विश्वास न था. उसे अभी बहुत लंबी यात्रा करनी थी. क्या वह मिस बाइलैंड से पहले घर पहुँच सकती थी?

नैल्ली ने हार न मानी. प्रशांत महासागर पार करने के लिए वह एक जहाज़ पर सवार हो गई. आखिरकार कई सप्ताह बाद वह सैन फ्रैंसिस्को में उतरी.

सैन फ्रैंसिस्को में वह न्यू जर्सी जाने वाली एक रेलगाड़ी पर चढ़ गई. नैल्ली आशा कर रही थी कि यह यात्रा तेज़ गति से पूरी हो जाएगी. वह घर पहुँचने के लिए उतावली हो रही थी.
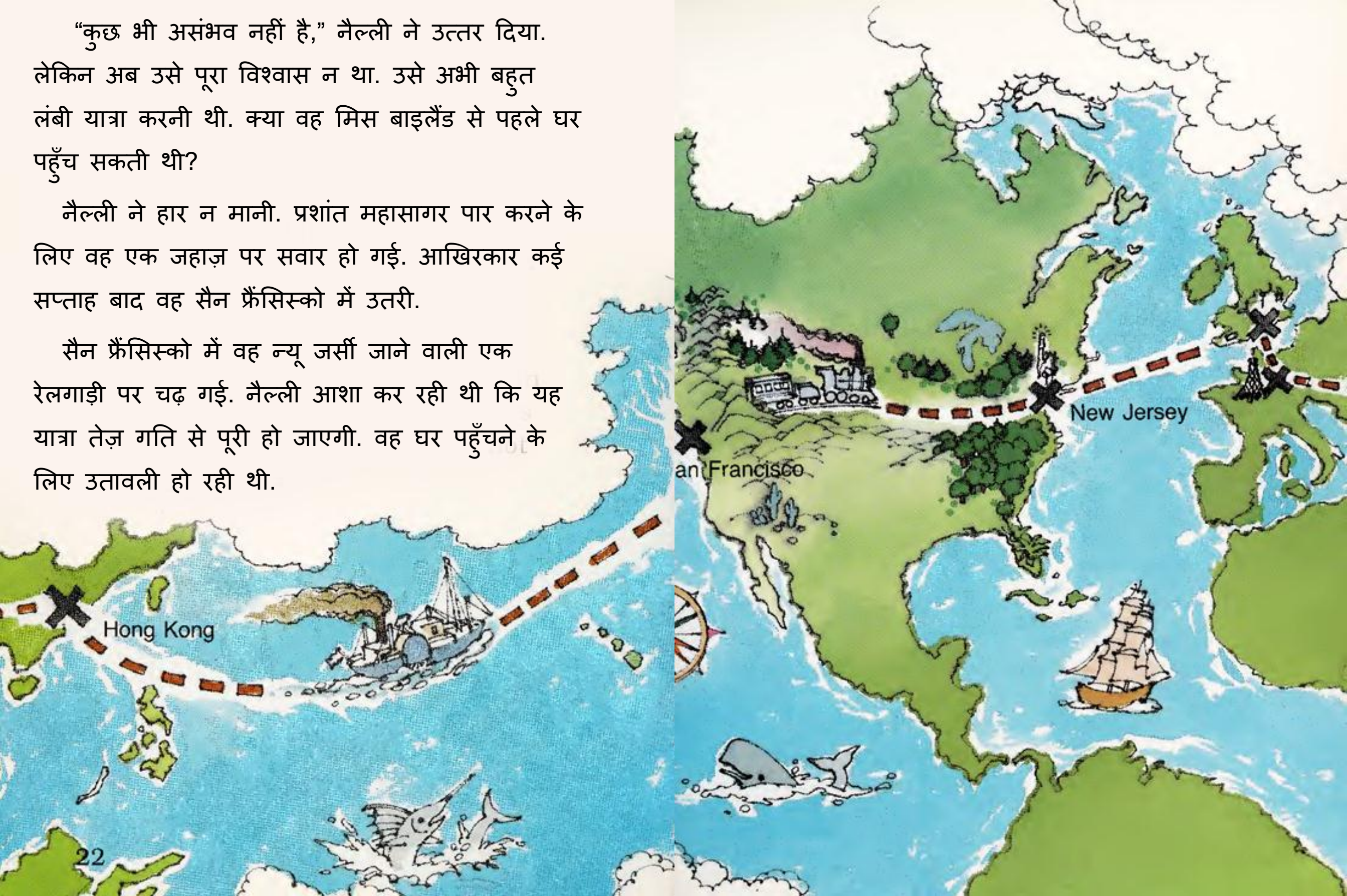
न्यू जर्सी पहुँचते-पहुँचते रेलगाड़ी कई जगह रुकी. हर स्टेशन पर लोग नैल्ली से मिलने आये. उन्होंने पढ़ा था कि वह पूरी दुनिया की यात्रा कर रही थी. वह सब उसकी सफलता की कामना करना चाहते थे.

एक स्टेशन पर एक आदमी उसकी ओर चिल्लाया, “आपको मुझ से हाथ मिलाना होगा!” जब नैल्ली ने उससे हाथ मिलाया तो वह हँसा और बोला, “मेरे हाथ में खरगोश का पाँव है. यह आपके लिए भाग्यशाली होगा!”

शायद खरगोश का पाँव नैल्ली के लिए भाग्यशाली ही निकला. न्यू जर्सी तक उसकी यात्रा तेज़ गति से पूरी होने लगी.

अंतिम स्टेशन से पहले मिस्टर काक्रिल ट्रेन में आ गये. उन्होंने नैल्ली को बताया कि मिस बाइलैंड अभी वापस न आई थी. नैल्ली उससे पहले पहुँच गई थी. फिर उन्होंने नैल्ली से कहा कि वह अगले स्टेशन पर ट्रेन से उतर जाए. उस स्टेशन पर वह उसी जगह होगी जहाँ से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी.

जैसे ही ट्रेन अंतिम स्टेशन के अंदर आई, नैल्ली ने बाहर देखा. उसने स्टेशन पर कई लोगों को खड़े पाया. वह सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे.

नैल्ली प्रसन्नता से हँसी और कूद कर ट्रेन से बाहर आ गई. जैसे वह प्लेटफार्म पर खड़ी हुई, मिस्टर काक्रिल ने समय जानने के लिए घड़ी देखी. वह दिन था 25 जनवरी 1890, समय था दुपहर बाद 3.31. नैल्ली ने 72 दिनों से थोड़ा अधिक समय में पूरी दुनिया का चक्कर लगाने में सफलता पाई थी.

"मैंने कर दिखाया!" नैल्ली चिल्लाई. "कुछ भी असंभव नहीं है. लेकिन वापस घर पहुँच कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ."
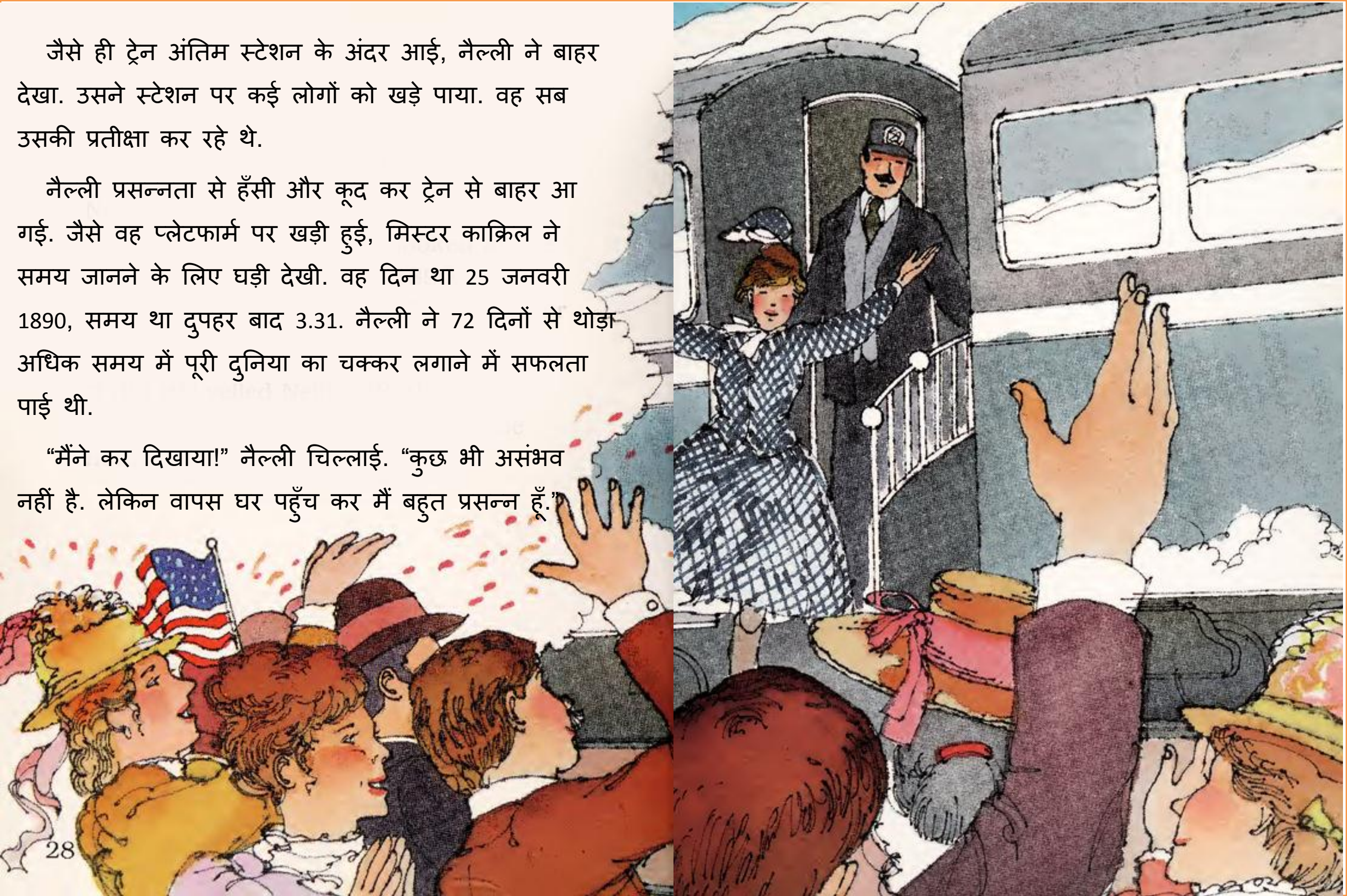
नैल्ली ने अपनी यात्रा का वृत्तांत लिखा. उसने कई और कहानियाँ भी लिखीं. उसकी कहानियाँ पढ़ कर लोगों को लगता कि वह नई-नई जगहों की यात्रा कर रहे थे और नये-नये दृश्य देख रहे थे. नैल्ली ने उन्हें दुनिया के दर्शन कराये और बार-बार यह दिखाया कि कुछ भी असंभव नहीं होता.